Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन की समभावनाएं जवाई-लूनी बेसिन के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन

डॉ. उम्मेद कुमार चौधरी*

* सह आचार्य (भूगोल) राजकीय महाविद्यालय, बाली (राज.) भारत

प्रस्तावना – पर्यटन कई देशों में अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। पर्यटन के आर्थिक प्रभाव से होने वाली आय और रोजगार के प्रभाव महत्वपूर्ण हैं और पर्यटन विकास को बढ़ावा देने और बनाए रखने वाली नीतियां इन आर्थिक लाभों को प्रदान करने में एक आवश्यक भूमिका निभाती हैं। इस क्षेत्र पर नीति निर्माताओं और जनता का बहुत ध्यान जाता है, अधिकांश देशों में पर्यटन के आर्थिक महत्व को लगातार कम आंका गया हैं। लेकिन भारत में पर्यटन अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण क्षेत्रो में से एक है। भारत अपनी भौगोलिक विविधता, समृद्ध इतिहास एवं संस्कृति इसकी सुंदरता हर साल दूनिया के कोने कोने से पर्यटकों को आकर्षित करती है। ऐतिहासिक व आध्यात्मिक पर्यटन के विश्व प्रसिद्ध स्थानों जैसे महलों, मंदिर, दुर्ग, किलों से लेकर गुफाओं और शिल्पकला तक, भारतीयों की विविध संस्कृति परम्पराएं, रिति-रिवाज, मेले त्यौहार आदि दूनियां के लोगों के लिए भारत में पर्यटन की यात्रा का कारण प्रदान करता है। भारत के आर्थिक विकास और समग्र विकास के साथ पर्यटन का मजबूत संबंध है। यह न केवल देश के सकल घरेलू उत्पादन और विदेशी मृद्रा में महत्वपूर्ण योगदान देता है, बल्की देश की आर्थिक सवृद्धि और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

राजस्थान को पर्यटन के क्षेत्र में न केवल देश में अपितु विश्व पर्यटन मानचित्र पर प्रमुखता से जाना जाता है। राजस्थान को सदियों से अपनी गौरवगाथा, ऐतिहासिक स्थलों, किलों, महलों एवं हवेलियों, ऐतिहासिक एवं कलात्मक बाड़ियों, झीलों, कला एवं संस्कृति, मेलों एवं उत्सवों, शास्त्रीय एवं लोक संगीतों व नृत्यों, हस्तकलाओं, तीर्थस्थलों, प्राकृतिक सौन्दर्य, पशु-पक्षी अभ्यारण्य, पर्वतों एवं मरुस्थलीय घोरों के कारण देश-विदेश में सराहा जाता है। यही कारण है कि राजस्थान आये बिना पर्यटकों की भारत पर्यटन यात्रा अधूरी रहती है।

ग्रामीण पर्यटन एक ऐसा क्षेत्र है या ग्रामीण जीवन से संबंधित क्षेत्र परिलक्षित होते हैं जैसे ग्रामीण जीवन शैली, कला और ग्रामीण संस्कृति आदि, भारत गांवो का देश है जहां लगभग 68.4% जनसंख्या गांवो में निवास करती है। प्रत्येक गांव की अपनी अलग-अलग संस्कृति, भाषा, खान-पान पहनावा आदि होता है, चुकि भारत जैसे देश में जिसमें विविधता और अनेकता का समायोजन दिखाई देता है वहीं गांवो में भी भौगोलिक, सामाजिक एवं संस्कृति विविधता देखने को मिलती है। गांवो में प्रकृति का सौंदर्य बिखरा हुआ पड़ा है, यहां की लोककला हस्तशिल्प व संस्कृति पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त है।

अध्ययन क्षेत्र– गोडवाड़ क्षेत्र 'गीरीवाड़' (पहाडों का प्रदेश) का अपभ्रंश है, जो अरावली पर्वतमाला से घिरा है। भौगोलिक रूप से इसे मूलत: लूनी बेसिन या लूनी-जवाई बेसिन क्षेत्र के नाम से पहचाना जाता है जो कि अरावली पर्वतमाला से निकले वाली लूनी और उसकी सहायक नदियों जवाई, सुकडी आदि का अपवाह क्षेत्र है।प्रशासनिक दृष्टि से गोड़वाड क्षेत्र में राजस्थान के पाली, जालोर, सिरोही व बालोतरा (आंशिक रूपों) जिला को शामिल किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में पाली जिले के देसूरी, बाली, रानी तथा सुमेरपुर उपखण्ड क्षेत्र के प्रमुख पर्यटक स्थलों को शामिल किया गया है। यह अरावली पर्वत का पहाडी भाग है। जो अपार प्राकृतिक सुन्दरता से घिरा ऐतिहासिक व धार्मिक क्षेत्र है, पर्यटक प्रकृति को निहारने और मन की शांति के लिए प्रतिवर्ष लाखों पर्यटक यहां पहुचते है। यहां प्रमुख स्थलों में रणकपुर, जवाईबांध, परशुराम महादेव, स्वर्ण जैन मन्दिर फालना, सोनाणा खेतलाजी, जूना खेडा व आशापुरा मन्दिर नाडोल, जैकल पर्वत नारलाई, निम्बो का नाथ (साण्डेराव) इसके अलावा राणकपुर व जवाई जंगल सफारी व राणकपुर - जवांई महोत्सव आदि है।

शोध उद्देश्य– प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र के सबसे संभावित स्थलों की पहचान कर, ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक एवं सामाजिक लाभ प्राप्त कर, रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना एवं राजस्व प्राप्ति के नये अवसरों की तलाश करना है।

1. ग्रामीण पर्यटन स्थलों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत करना।
2. ग्रामीण पर्यटन की चुनौतिया और समाधान के उपाय।

शोधअन्तराल – साहित्य की समीक्षा करने के बाद शोधकर्ता ने पाया है कि अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण पर्यटन की संम्भावनाओं वाले क्षेत्र में पर्याप्त शोध नही किया गया और अध्ययन क्षेत्र के के विभिन्न पर्यटन विशेष रूप से नाडोल, नारलाई, घाणेराव, जवाई पेन्थर क्षेत्र, राणकपुर एवं उसके समीपवर्ती क्षेत्र में पर्यटन के विकास की पर्याप्त गुंजाइश है। जो शोधकर्ता के अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन विकास के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करने और सुझाव देने का अवसर प्रदान करता है।

शोध प्रविधि– प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध उद्देश्यों के विश्लेषण करने के लिए विभिन्न स्रोतों से प्राप्त द्वितीयक आंकड़ों का इस्तेमाल किया गया है। जिसमें भारत सरकार व राज्य सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा प्रकाशित सरकारी रिपोर्ट, अकादमिक लेख, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा

प्रकाशित आंकड़ों तथा जिला गजेटियर, अकादमिक साहित्य पत्र–पत्रिका, पुस्तक, ग्रन्थ आदि शामिल है।इसके साथ ही ग्रामीण जीवन शैली, गतिविधियों और पर्यटक स्थलों की गहन जानकारी हेतु प्रत्यक्ष अवलोकन तथा स्थानीय निवासियों से प्राप्त जानकारी शामिल है।

शोध साहित्य का पुनरावलोकन– अंशुमाली पाण्डे (2015) ने अपने शोध पत्र दादर व नगर हवेली के ग्रामीण पर्यटन का विकाश में ग्रामीण पर्यटन का उल्लेख करते हुए बताया है कि यह क्षेत्र अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान प्रदर्शित कर रहा है। उन्होने प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों के आधार पर तथ्यों को एकत्र किया। अध्ययन के फलस्वरूप यह ज्ञात हुआ कि उस क्षेत्र के पर्यटन विकास ने वहाँ की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस अध्ययन में वह ग्रामीण पर्यटन के विकास में स्थायी उपायों की कमी का भी उल्लेख करते हैं।

अजिता कुमारी (2019) ने ग्रामीण पर्यटन के सम्बन्ध में अपने शोध पत्र में भारत में ग्रामीण पर्यटन के सम्बन्ध में बताया है कि ग्रामीण पर्यटन वास्तव में ग्रामीण विकास का मुख्य स्त्रोत साबित हो रहा है। उनके अनुसार आज के सूचना क्रान्ति के युग में संचार तंत्र के बिना पर्यटन सुविधाएँ प्रभावित नहीं कर पाती है। मोबाइल, इन्टरनेट, टेलीविजन जैसी संचार सुविधाओं ने पर्यटकों को गाँवों की ओर आकर्षित किया है।

चौधरी उम्मेद (2020) ने अपने शोध पत्र रणकपुर पर्यटन स्थल के भौगोलिक अध्ययन मे पर्यटन क्षेत्र में पर्यटन की नई संभावनाओं का अध्ययन किया तथा घरेलू में विदेशी पर्यटकों का समाज, संस्कृति अर्थव्यवस्था तथा पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव की चर्चा करते हुए पर्यटन क्षेत्र की समस्या से संबंधित सुझाव प्रस्तुत किये।

उमाकांत इदौलिया(2021)ने अपने शोध पत्रभारत में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाओ और प्रभाव विषय पर एक अध्ययन किया गया। जिसमें उन्होने सामोद (जयपुर) के विशेष सन्दर्भ में ग्रामीण पर्यटन का उल्लेख किया। इस अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने सांस्कृतिक और ऐतहासिक धरोहर से समृद्ध राजस्थान के सामोद (जयपुर) गांव का चयन किया। जिसमें उन्होनें स्थानीय निवासियों व पर्यटकों से प्रश्नावलियों के आधार पर सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व पर्यावरणीय प्रभाव से सम्बन्धित प्रश्नों के आधार पर तथ्य एकत्र करते हुए ग्रामीण पर्यटन के सस्कृतिक, समाज अर्थव्यवस्था व पर्यावरण पर पहनें वाले प्रभावो का समीक्षात्मक विवरण प्रस्तुत करते हुए सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों का उल्लेख करते हुए समाधान प्रस्तुत किये। अपने अध्ययन के निष्कर्ष में उन्होनें बताया कि ग्रामीण पर्यटन ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार तो लाता ही है साथ–साथ राष्ट्र की आर्थिक स्थिति जीवन शैली पर सकारात्मक प्रभाव पडता है।

कुमार और कुमावत (2021) बताते हैं कि राजस्थान बहुत लोकप्रिय डेस्टिनेशन है और दुनिया भर में इसकी एक महत्वपूर्ण पहचान है। पर्यटन उद्योग राज्य की अर्थव्यवस्था में योगदान देता है, रोजगार पैदा करता है, हस्तशिल्प उद्योगों का विकास करता है, विदेशी मुद्रा कमाता है, बुनियादी ढांचे का विकास करता है, क्षेत्रीय और सामाजिक विकास पर ध्यान केंद्रित करता है।

शर्मा (2021) बताते हैं कि राजस्थान की राजधानी जयपुर में हर साल घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पर्यटक आते हैं। पर्यटन उद्योग बुनियादी आर्थिक ढांचे के विकास में मदद करता है। पर्यटक उस जगह पर आते हैं और स्थानीय उत्पादों और हस्तशिल्प में रुचि दिखाते हैं। शहर में टूरिज्म इंडस्ट्री के लिए बहुत बड़ा मौका है, क्योंकि यहाँ होटलों, रेस्टोरेंट, टूर ऑपरेटरों, सर्विस प्रोवाइडर्स, गाइड वगैरह की बड़ी चेन हैं। पॉलिसी बनाने वालों और स्टेकहोल्डर्स को इकॉनमी और इंडस्ट्री की बेहतरी के लिए पॉलिसी बनानी चाहिए। यह स्टडी सस्टेनेबल डेवलपमेंट और जयपुर शहर के लोकल इकोनॉमिक डेवलपमेंट पर आधारित है।

ग्रामीण पर्यटन स्थलों का परिचयात्मक विवरण

ऐतिहासिकपर्यटन स्थल

देसुरी – देसुरी का अर्थ है स्थानीय राजस्थानी बोली में देवताओं का स्थान जो संस्कृत शब्दों देव (ईश्वर) और सूरी (स्थान) से मिलकर बना है। यह नाम क्षेत्र की समृद्ध धार्मिक विरासत और यहाँ फैले असंख्य प्राचीन मंदिरों और तीर्थस्थलों की उपस्थिति को दर्शाता है। प्राचीन दुर्ग, बावडिया और कलापूर्ण छतरिया भी इसके इतिहास की साक्षी के रूप में विद्यमान है। इसकी व्युत्पत्ति से पता चलता है कि इस क्षेत्र में आध्यात्मिक भक्ति और दैवीय उपस्थिति में विश्वास से जुड़ा एक ऐतिहासिक महत्व है।देसुरीअपने ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है, विशेष रूप कस्बे का इतिहास सदियों पुराना है, जिसमें प्राचीन बस्तियों के प्रमाण और इसकी रणनीतिक स्थिति शामिल है, जिसने संभवत: इसके विकास में योगदान दिया। देसुरी अपने पारंपरिक गांवों और सांस्कृतिक रीति–रिवाजों के साथ राजस्थान के ग्रामीण जीवन की झलक भी प्रस्तुत करता है।

देसूरी दुर्ग – पाली जिले में सादड़ी नगर से 16 कि.मी दूर मांगलिया राजपूतों द्वारा समुद्रतल से 1587 फीट की उँचाई पर देसूरी दुर्ग का निर्माण करवाया गया। यह दुर्ग मूलत: मांगलिया चौहानों और सोलंकियों के अधिकार में रहा इस दुर्ग का निर्माण 11 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में माना जाता है। सौलंकियों के पश्चात् उदयपुर के महाराणाओं और 1826 में विजयसिंह जी ने इस दुर्ग पर अधिकार किया दुर्ग में धनेश्वर शिवालय महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल है हालांकि दुर्ग काफी जर्जर अवस्था मेंहै।

नाडोल – यह प्राचीन ऐतिहासिक शहर भारमल नदी के किनारे बसा हुआ है। नाडोल का नाम संस्कृत के शब्दों नाद (नीचे) और डोल (पहाड़ी) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है पहाड़ी के नीचे बसा। प्राचीन ग्रंथो में इसे नार्दुलपुर, नंदपुर, नंडूला आदि नाम से संबोधित किया जाता था। जो 10वीं–12वीं शताब्दी के बीच नाडोल के चौहानों (चाहमान) की राजधानी था। शाकंभरी चौहान शाखा के शासक राव लक्ष्मण चौहान (करीब 950 ईसवी) ने इसकी स्थापना की थी। यह एक मजबूत दुर्ग से घिरा नगर था, जो मेद लुटेरों और बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित था। 10वीं शताब्दी में निर्मित आशापुरा माता (चौहानों की कुलदेवी), मंदिर नाडोल के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। यहाँ के शासक शैव थे लेकिन उन्होंने जैन मंदिरों को भी संरक्षण दिया। यह नगर प्राचीन कला और संस्कृति का केंद्र रहा।सन् 1197 ईस्वी में कुतुबुद्दीन ऐबक के आक्रमण के बाद नाडोल के चौहान कीर्तिपाल के नेतृत्व में जालौर चले गए । नाडोल सन् 1291 ईस्वी तक चौहानों के अधीन रहा ,1311 में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा उदयसिंह के वंशज कान्हादेव को हराने के बाद इस क्षेत्र पर दिल्ली सल्तनत का कब्जा हो गया। राव राजा लक्ष्मण , आल्हणदेव, केल्हण, और जयतसिंह यहाँ के प्रमुख चौहान शासक थे।

नाडोल दुर्ग – नाडोल कस्बे में नीलकण्ड महादेव मंदिर के पृष्ठ भाग में नाडोल दुर्ग के अवशेष मौजूद है। जिसे महमूद गजनवी और कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा नष्ट किया गया था।

जूना खेड़ा – यह प्राचीन ऐतिहासिक स्थल भरमल नदी के किनारे स्थित है जूनाखेड़ा को चौहान वंश के क्षत्रियों की प्राचीन राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। यह एक ऐतिहासिक स्थल है, जिसका संबंध महान हिंदू राजा पृथ्वीराज चौहान से है। पृथ्वीराज चौहान के पिता की मृत्यु सोलंकी वंश से युद्ध के दौरान इसी स्थान पर हुई थी ।जूनाखेडा पुरातात्विक महत्व का एक संरक्षित स्थान है। जिसका इतिहास 8वीं व 9वीं शताब्दी से सम्बन्ध रखता है। इसके उत्खनन से पुरातत्व महत्व की अनेक दुर्लभ वस्तुएँ प्राप्त हुई है पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग के अनुसार जूना खेड़ा में खुदाई के दौरान सिक्के, विभिन्न प्रकार की लोहे की वस्तुएं, तांबे की अंगूठियां अधूरे मनकों के अलावा, अन्य वस्तुएं भी बरामद की गईं। प्रारंभिक देवनागरी अक्षरों में उत्कीर्ण मुहरें भी मिलीं।खुदाई से पता चला है कि जूना खेड़ा में प्रारंभिक मध्युगीन मनुष्य ईंट और ग्रेनाइट के घरों में रहते थे। जिनमें उस समय बैठक कक्ष, रसोई और भट्टे होते थे, और विभिन्न आकारों के पत्थरों को जोड़ने के लिए लोहे के क्लैंप का उपयोग किया जाता था। जूनाखेडा में प्रवेश के पांच मुख्य द्वार थे। जो क्रमश: कांटा बाव गेट, धुवां बाव गेट, तालाब, दरवाजा, सूरजपोल तथा लोको का दरवाजा कहते हैं। यह जोधपुर और उदयपुर के बीच एक समृद्ध व्यापार केंद्र था।

बाली दुर्ग – बाली दुर्ग का निर्माण जालौर के चौहान राजा वीरमदेव द्वारा अपनी बहन बालादे और उसके पति मेवाड़ के राणा हम्मीर सिंह के निवारा हेतु बनवाया था। क्षेत्र में मान्यता है कि चौहान राजा बलदेव ने वि.सं. 1240 में इस दुर्ग का निर्माण करवाया और बाली नाम का एक नगर बसाया। बाली दुर्ग तीन परकोटों से गिरा है। इन परकोटों का निर्माण क्रमश: वीरमदेव, महाराणा उदयसिंह द्वारा करवाया गया। दुर्ग का खेमली दरवाजा आज भी विद्यमान है जबकि धरु, सेला, सेवाड़ी के द्वार अब समाप्त हो चुके है। किले की दीवारे बुझे दरवाजे बोल माजीसा मंदिरशीतला माता मन्दिर आज भी मौजूद है। यहां दुर्ग में बारुद के भण्डार दबे पड़े है।

घाणेराव – राजस्थान के इतिहास में घाणेराव कस्बा या घाणेराव का ठिकाना सुप्रसिद्ध रहा है। इस ठिकाने की स्थापना सन् 1606 ईस्वी मे मेवाड के महाराणा अमरसिंह प्रथम के काल मेंमेड़तिया राठौड़ ठाकुर गोपालसिंह (गोपालदास) द्वारा की गई थी।रियासती काल में कुम्भलगढ़ की सुरक्षा का महत्त्वपूर्ण भार इसी ठिकाने पर था ।प्राचीन दुर्ग बावड़ियाँ कलात्मक छतरियां इसके इतिहास के साक्षी गवाह है घाणेराव धार्मिक और सांस्कृतिक मामले में बड़ा समृद्ध है, इस नगर में सनातन और जैन धर्म के कई बड़े व खुबसुरत मंदिर बने है । यहाँ के शासकों ने मेवाड़ और मारवाड़ राज्य की रक्षार्थ जहाँ बलिदान दिए वहीं जनहित में विभिन्न राणियों, शासकों और महाजनों ने वर्षा जल को संग्रहित कर पेयजल व कृषि को बढ़ावा देने के लिए लगभग 21 बावड़ियाँ बनवाई थी।

घाणेराव चित्र शैली राजस्थान के पाली जिले के गोडवाड़ क्षेत्र में विकसित मारवाड़ स्कूल की एक प्रमुख उप-शैली (ठिकाना कला) है। नारायण, छज्जू और कृपा राम जैसे चित्रकारों द्वारा विकसित यह शैली रामायण, महाभारत, श्री कृष्ण के जीवन से जुड़ी कथाओं के साथ ही सामंती जीवन के दरबारी और व्यक्तिगत चित्रण में ठाकुरों, रानियों, योद्धाओं और शिकार के दृश्यों का अंकन, जिसमें मुगल प्रभाव के साथ राजस्थानी कला की झलक मिलती है।

नारलाई– राजस्थान की पाली जिले में स्थित ऐतिहासिक गांव है जो जैकाल पहाड़ी (हाथी जैसी पहाड़ी) जैन व वैष्णव मंदिर और प्राचीन बावडियो के लिए जाना जाता है। यह गोड़वाड़ की पंच तीर्थी में से एक तीर्थ है। इस स्थान का प्राचीन नाम नन्दकुलवन्ति, नारदपुरी और नाडुलाई (नाडुलाड़गिका) था। ऐसी किवदंती है कि देवर्षि नारद ने इस स्थान पर घनघोर तपस्या की और अपने नाम से एक नगरी बसाई जिसे आज नारलाई के नाम से जाना जाता हैं। एक प्राचीन नगर के अवशेष आज भी जमीन में से निकलते हैं।

पारिस्थितिकी पर्यटन स्थल

जवाई बांध – जवाई बांधपश्चिमी राजस्थान का सबसे बड़ा बांध है। इस बांध को मारवाड़ का अमृत सरोवर, मान सरोवर एवं मारवाड़ की जीवन रेखा भी कहा जाता है। यह बांध अरावली की तलहरी में लूनी नदी की सहायक नदी जवाई नदी का पानी रोककर एरिनपुरा ग्राम के निकट इस बांध का निर्माण किया गयाबेडा नदी जवाई नदी की प्रमुख सहायक नदी है। इस बांध की नींव 12 मई 1946 को जोधपुर के महाराजा उम्मेदसिंह द्वारा रखी गई इस बांध की भराव क्षमता 61.25 फीट है। जवाई बांध किसी पहचान का मोहताज नहीं है अनुकुल वातावरण के चलते अलग-अलग प्रजापियों के पशु पक्षियों का घर है, बड़ी बड़ी पहाड़ियां, प्राकृतिक गुफा, घास व वन क्षेत्र, यहां की आबो-हवा पर्याप्त भोजन व पानी की व्यवस्था वन्य जीवों के फलने-फुलने के लिए उपयुक्त है। यह क्षेत्र पैथर व मगरमच्छ के लिए खयात रहा है। इनके अलावा, भालू घारीदार हाइना, लोमड़ी, नील गाय, भेडिया, चिंकारा, ब्लूबुल व कई स्थानीय व प्रवासी पक्षियों के लिए (आश्रय स्थल) शरण गाह है।

जवाई लेपर्ड्स हिल – पाली जिले में सुमेरपुर के पास स्थित जवाई लेपर्ड क्षेत्र प्राचीन ग्रेनाइट पहाड़ियों और विशाल जवाई बांध के लिए प्रसिद्ध है, इसे 'लेपर्ड्स हिल' के रूप में भी जाना जाता है। यह क्षेत्र अपनी अनूठी पैंथर सफारी ,प्रवासी पक्षियों, मगरमच्छों और अन्य वन्यजीवों के निवास स्थान के लिए पहचाना जाता है। यहाँ पैंथर और स्थानीय समुदाय के बीच अद्भुत सह-अस्तित्व देखने को मिलता है। जहाँ इंसान और तेंदुए बिना किसी संघर्ष के साथ रहते हैंँ बेरा, पैरवा, सैणा, जीवदा, बिसलपुर, दूदनी, कोठार, लालपुरा, सिवेरा और लुंदाड़ा समेत करीब 20 गांव ऐसे हैं, जहां पैंथर की 50से 60 फैमिली हैं ,जो यहाँ की चट्टानी गुफाओं में स्वतंत्र रूप से विचरण करती हैं। अक्टूबर से मार्च के बीच यहाँ की सैर करना सबसे अच्छा माना जाता है, प्रति वर्ष हजारों देसी व विदेशी पर्यटक भ्रमण हेतु आते है।

रणकपुर बांध – मघाई नदी पर बना रणकपुर बांध (सादडी बांध) पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। इस बांध का निर्माण जोधपुर रियासत के महाराजा सर प्रतापसिंह ने वर्ष 1942-48 में अरावली पर्वतमाला की तलहटी में करीब छ: महाड़ियों को मिलाकर बनाया था। यह बांध सागरतल से 221 मीटर कि उच्चाई पर बना है, इसकी भराव क्षमता 62.70 फीट (205 MCFT) है। इस बांध पर शाम के समय सूर्यास्त का दृश्य प्राकृतिक सुंदरता के साथ पर्यटकों को आकर्षित करता है।

ठंडी बेरी – घाणेराव – घाणेराव के समीप मारवाड़-मेवाड़ के रियासतकालीन रास्ते मे 600 फीट की ऊंचाई पर तीन नदियों, दो नालों को पार करने पर ठंडी बेरी दिखाई देती है,प्रारंभ में इस मीठा पानी के कुँए को स्थानीय लोग ठंडी बेरी कहते थे।ठंडी बेरी स्थल कोवन विभाग द्वारा 1978 में ठंडी बेरी बांध का रूप दिया। इस बांध की खासियत यह है, कि यह कभी सूखता नहीं। यहां तक कि इस सदी के सबसे भीषण अकाल छप्पनिया काळ में भी बांध से अविरल धाराएं झरनों के रूप में बहती रहीं, पूरे कुंभलगढ़ अभयारण्य में विचरण करने वाले वन्यजीवों की प्यास बुझाने का एकमात्र

स्त्रोत है। मानसून सीजन में अगर आप लेह–लद्दाख और कश्मीर की वादियों जैसा दीदार अगर पाली जिले में ही करना चाहते हैं तो आपको ठंडी बेरी जरूर जाना चाहिए। अरावली की पहाड़ियां के शांत वातावरण में जहाँ आपको हिरण, जंगली सूअर और विदेशी पक्षी देखने को मिल सकते हैं। रास्ते में मगरमच्छ धूप सेंकते देखे जा सकते हैं, और एडवेंचर का अहसास कराने वाली सड़कें और शीतल हवा के झोंके आपको रोमांचित कर देंगे।

हर–हर गंगें बीजापुर – पाली जिले के बीजापुर (बाली तहसील) के निकट स्थित हर–हर गंगे एक प्राचीन और प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है, जिसे 'राजस्थान का मिनी हरिद्वार' भी कहा जाता है। यह स्थल लगभग 500 साल पुराना है और इसमें यहां हर–हर गंगे मां, हिंगलाज माता और नागरेश्वर महादेव के मंदिर स्थित हैं। जहां गौमुख से 24 घंटे निरंतर पानी बहता रहता है। यहाँ 5 चमत्कारी कुंड हैं। यह स्थान पहाड़ियों और जंगलों से घिरा है,यहां विभिन्न जातियों लोग अपने पूर्वजों की अस्थियां विर्सजन के लिए भी आते हैं, इसके साथ ही अठखेलियां करते बंदरों, कल–कल बहते झरने और हरी–भरी वादियां आपका मनमोह लेगी। यह स्थान अरावली की वादियों में स्थित होने के कारण मानसून के दौरान पर्यटकों की भीड़ लगी हुई है। आप प्राचीन मंदिर के दर्शन करने साथ झरने के पानी में नहाने व पहाड़ों में ट्रेकिंग का आनंद भी ले सकते है।

धार्मिक पर्यटन

रणकपुर जैन मंदिर – राजस्थान में अरावली पर्वत की घाटियों के मध्यचारो और जंगलों से घिरे रणकपुर में भगवान ऋषभदेव का चतुर्मुखी जैन मंदिर है। भारत के जैन मंदिरो में शिल्प एवं विशालता की दृष्टि से सम्भवत: इसकी इमारत सबसे भव्य एंव विशाल है। यह गोडवाड़ के जैन पंचतीर्थो में प्रमुख माना जाता है। इसका निर्माण आज से करीब 600 वर्ष पूर्व महाराणा कुम्भा के काल में सेठ धरणशाह ने संवत 1446 ई. में प्रसिद्ध शिल्प विशेषज्ञ श्देपाश की देखरेख में करवाया था। सेठ धरणशाह ने कुम्भलगढ़ से मालगढ़ जाने वाले रास्ते में माद्रीपर्वत की छाया में बसे मादड़ी गांव को मंदिर निर्माण स्थल हेतु चुना, बाद में धरणशाह ने मादड़ी गांव का नाम बदलकर रणकपुर कर दिया। रणकपुर के इस चौमुखा मंदिर की इमारत का निर्माण लगभग 48000 वर्गफीट जमीन पर किया गया, जिसमें कुल 24 मण्डप, 84 शिखर और 1444 स्तम्भ है। इस मंदिर में चार कलात्मक प्रवेश द्वार है, मंदिर के मुख्य गृह में तीर्थकर आदिनाथ की संगमरमर से बनी चार विशाल मूर्तियां है, करीब 72 इंच ऊंची ये मूर्तियां चार अलग अलग दिशाओं की ओर उन्मुख है। इसी कारण इसे चतुर्मुख मंदिर कहा जाता है। मुख्य मंदिर के चारों तरफ उत्कीर्ण मूर्तियों में जनजीवन की झांकिया दिखाई देती है, ऊंचे तोरणद्वार, सभामंडप गर्भ गृह, देवकुलिकाय, विभिन्न मुद्राओं में उत्कीर्ण नृत्यागनाएं संगीत के विभिन्न वाद्य प्राकृतिक दृश्यावलिया, पौराणिक दृश्य समकालीन वेशभूषा आभूषण आदि अत्यंत सुंदरता के साथ प्रस्तुत किए गए है।

सूर्य मंदिर – यह जैन मंदिर के पास ही स्थित है, जिसे सूर्य नारायण मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। इसमें नागर शैली में सफेद चूने पत्थर से सूक्ष्म आभूषणों का काम किया गया है। 13वीं सदी में बने इस मंदिर के ध्वस्त होने के बाद 15वीं शताब्दी में इसका पुर्ननिर्माण किया गया। सूर्य मंदिर का मुख पूर्व दिशा की ओर है, जिसमें भगवान सूर्य की रथ पर सवार मूर्ति दिखाई गई है, मंदिर की दीवारों पर योद्धाओं, घोड़ो और स्वर्गीय पिंडों की अदभुत नक्काशी हुई है, जो विगत युग के लोगों की कलात्मक उत्कृष्टता का प्रतिनिधित्व करती है। मंदिर के गर्भ गृह से पहले एक अष्टकोणीय मण्डप है, जिसमें छ: बरामदे है, सूर्य मंदिर का प्रबंधन उदयपुर के शाही परिवार ट्रस्ट द्वारा किया जाता है।

परशुराम महादेव – पाली और राजसमंद जिले की सीमा पर अरावली पर्वत श्रृंखला की एक कन्दरा में स्थित परशुराम मन्दिर मूलत: भगवान शिव को समर्पित है। इसे 'राजस्थान का अमरनाथ तथा मरुस्थल का कैलाश' भी कहते हैं। परशुराम को भगवान विष्णु का छठा अवतार माना जाता है, अपनी तपोस्थली के लिए परशुराम ने अपने फरसे से अरावली पर्वत श्रृंखला में एक कन्दरा (गुफा) का निर्माण किया जो समुद्रतल से लगभग 3500 से 4000 मीटर की उंचाई परस्थितहैं। परशुराम गुफा से कुछ धार्मिक मान्यता भी जुड़ी है वही व्यक्ति बद्रीनाथ के कपाट खोलने का अधिकारी है जिसने परशुराम महादेव के दर्शन किए हों। परशुराम महादेव में सबसे पहले कुण्डधाम बना हुआ है। जिसे शिव कुण्ड कहा जाता है। शिव कुण्ड के निकट हनुमान जी का मन्दिर, शिव मन्दिर, गोविन्द स्वागी मन्दिर स्थित है। उक्त मन्दिरों के दर्शनी के पश्चात् 200 सीडियों के साथ परशुराम महादेव की पैदल चढाई प्रारम्भ होती है। यहां से लगभग 3 से 4 कि.मी. पहाड़ी मार्ग से चढ़ना पड़ता है। उक्त दूरी में पर्यटकों को विभिन्न प्रकार के आनंद प्राकृतिक वातावरण के साथ प्राप्त होते हैं।गुफा में प्राकृतिक स्वयंभू शिवलिंग हैं , जिस पर लगातार जल अभिषेक होता रहता है तथा छत पर अनेक गौ–मुख और कमलाकार आकृतियों निर्मित है। स्थानीय लोग प्रतिवर्ष श्रवण सदी छठ और सप्तगी को यहा विशाल मेला भरता है। परशुराम महादेव स्थल का भौगोलिक रूप से विशेष महत्व है महादेव गुफा में चूना निर्मित स्टैलेग्माइट व स्टैलेक्टाइट स्थलाकृतिया देखने को मिलती हैसाथहीपहाड़ों में ट्रेकिंग का आनंद भी ले सकते है।

निम्बो का नाथ (निम्बेश्वर महादेव) – राजस्थान के पाली जिलें में फालना सांडेराव मार्ग के मध्य में अवस्थित निम्बों का नाथ महादेव मन्दिर जिसे निम्बेश्वर महादेव के नाम से भी जाना जाता है। पौराणिक हिन्दू मान्यताओं के अनुसार अपने निर्वासन काल में पांडवों की माता कुन्ती द्वारा यहां भगवान शिव की पूजा की जाती थी। मन्दिर की दीवारें कलात्मक शिल्प और नक्काशी से युक्त थी यह मन्दिर कालान्तर में नष्ट हो गया था जो वि.सं. 1632 में पुन: प्रकाश में आया। यहां पर पाण्डवों द्वारा स्थापित नव दुर्गा मन्दिर और एक बावड़ी के प्रमाण भी प्राप्त हुए। मन्दिर में स्थापित भगवान शिव की प्रतिमा अत्यन्त सुन्दर एवं आकर्षक प्रतीत होती है। प्रतिवर्ष शिवरात्री और वैशाखी पूर्णिमा के दिन यहां मेले और उत्सव का आयोजन किया जाता है।

सोनाणा खेतलाजी – देसूरी तहसील के सारंगवास व सोनाणा गाँव में सूकड़ी नदी के तट पर स्थितश्री सोनाणा खेतलाजी मंदिर लगभग 800 वर्ष पूर्व निर्मित हुआ था। यह मंदिर प्राचीन राजपूत स्थापत्य कला की सुंदर कला को दर्शाता है।मारवाड़ क्षेत्र के विभिन्न जाति और धर्म के लोगों के लिए खेतलाजी स्थानीय लोक देवता हैं। श्री खेतलाजी को भगवान भैरव के रूप में पूजा जाता है जिन्हें भगवान शिव का पांचवा अवतार माना जाता है। श्री खेतलाजी को श्री भैरव या श्री क्षेत्रपाल जी के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर में स्वयंभू साँप की मूर्ति भी है जिसे श्री खेतलाजी का रूप माना जाता है। श्री खेतलाजी काशी से मंडोर आए थे बाद में, उन्होंने सोनाणा का दौरा किया। ऐसा माना जाता है कि भगवान भैरव ने सोनाणा खेतलाजी में स्थित गुफाओं में अपना निवास बनाया औरअरावली पर्वत श्रृंखला में ध्यान कर रहे ऋषियों की रक्षा करते थे।

मुछाला महावीर मन्दिर – घाणेराव कस्बे में स्थित भगवान महावीर स्वामी

को समर्पित एक जैन मन्दिर है।अरावली की पहाडियों में बने इस मन्दिर का निर्माण काल 10वीं से 12वीं शताब्दी के बीच माना जाता है।मन्दिर के प्रवेश द्वार पर दो हाथियों की प्रतिमा दो पहरेदारों के रूप में बनी है। यहा प्रतिवर्ष चौत्र शुक्ल त्रयोदशी को मेला भरता है।इस मन्दिर से जुड़ी एक कहानी भी क्षेत्र में प्रचलित है, कि मेवाड़ महाराणा ने अपने सरदारों सहित दर्शनार्थ पधारे मन्दिर के पुजारी को महाराणा को प्रसाद दिया जिसमे एक बाल देखकर एक सामन्त ने व्यंग्य किया कि आपके भगवान के मुछे है। पुजारी ने भगवान में श्रद्धा रखने के कारण हाँ कह दिया, तभी महाराणा ने भगवान की मुछे देखने की बात कही इस पर पुजारी ने तीन दिन का समय मागा महाराणा के क्रोध के डरे पुजारी ने बिना अन्न जल ग्रहण किए तीन दिन तक भगवान की गौर तपस्या की तीन दिन पश्चात् महाराणा वापस आये तो मूर्ति पर मुछे देखकर उन्हें विश्वास नहीं हुआ ओर उन्होने मुछ का एक बाल खिचलिया जहा से दूध की धारा फूट पड़ी महाराणा भगवान के सामने नतमस्तक हो गये। राजस्थान के गोड़वाड़ सर्किट में स्थित यह मन्दिर जैन सम्प्रदाय के पँच तीर्थों में सम्मिलित है।

राता महावीर बीजापुर – राता महावीर के नाम से प्रसिद्ध जैन तीर्थ प्राचीन हत्थुन्डी (वर्तमान बीजापुर) नामक गांव मे स्थित है। जैन मुनि जिनविजय जी ने राता महावीर को राजस्थान के 556 जैन जीनालयों में सर्वाधिक प्राचीन स्वीकार किया है। इस मन्दिर का उल्लेख मुनि जानसुन्दर द्वारा रचित पुस्तक ष्श्री पार्श्वनाथ भगवान की परम्परा का इतिहासष में भी मिलता है। पुस्तक के अनुसार जैन धर्म के 24वे तीर्थकर महावीर स्वामी के इस मन्दिर का निर्माण वि.स. 360 में वीर देव श्रेष्ठी द्वारा भगवान पार्श्वनाथ के 30वे पटधर आचार्य सिद्धसुरी के आशीर्वाद से होना बताया गया है। मन्दिर में बनी भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा ईट और चुने से निर्मित है और इसका रंग लाल होने के कारण इसे राता महावीर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। प्रतिमा की मुख्य विशेषता पीछे का आकार सिंह का और मुख हस्ती का (हाथी) होना है। हाथी का मुख होने के कारण ही इस नगरी को हस्तीकुण्ड के नाम से सम्बोधित किया जाता था। जो वर्तमानहत्थुन्डी (वर्तमान बीजापुर)के रूप में पहचाना जाता है। आज जहा मन्दिर बना है। वहां प्राचीन काल में एक वैभवशाली नगर हुआ करता था। 14वीं शताब्दी के एक लेख के अनुसार यहा 8 कुरो, बावड़ियों स्थित भी 160 पणिहारिया पानी भरती थी। वि.स. 2001 में मन्दिर का जीर्णोद्धार कार्य सम्पन्न हुआ और यहा 24 देव कुलिकाएं गुख्य मन्दिर में स्थापित करवाई गई जो मन्दिर द्वार के दोनों और 6-6 एवं अंदर की और दाहिने और बांये भाग में 6-6 के रूप में स्थित है। मन्दिर के गर्भ गृह में मूल नायक श्री महावीर स्वामी प्रभु की पद्मानस्थ रक्तप्रवाल वर्णी एक 135 से.मी. की अत्यन्त प्रभाव शाली प्रतिमा स्थापित है। जिसके गले में मोतियो की माला हाथों में बाहुबन्ध, पांव और हाथ में सुन्दर कड़े पहनाऐ गए है।

आदिनाथ का जैन – नारलाई के जैन मंदिरों में से यहसबसे पुराना मंदिर है जो दसवीं शताब्दी का प्रतीत होता है। यहाँ से प्राप्त शिलालेखों में से सबसे प्राचीन लेख वि.सं. 1187 का है जिसमें चौहान राजा रायपाल द्वारा मंदिर को दान दिये जाने का उल्लेख है। शिलालेखों से ज्ञात होता है कि पहले यह महावीर स्वामी का मंदिर था, बाद में यहाँ आदिनाथ की मूर्ति स्थापित की गई। एक लेख में मंदिर के निर्माणकर्ता का नाम राजा सम्प्रति लिखा हुआ है। विक्रम संवत् 1597 के एक लेख में कहा गया है कि यह मंदिर पहले खेड़ नगर में स्थित था इसे संडेरक गच्छीय यशोभद्र सूरी अपनी मंत्र शक्ति से उड़ा कर लाये थे। योगी तपेश्वरजी भी यशोभद्रजी के समकालिक थे। वे भी एक मंदिर खेड़ नगर से उड़ाकर लाये थे। अब इन दोनों योगियों को जसिया व केशिया कहा जाता है। इन दोनों के स्वर्गारोहण के पश्चात दो स्तूप पास-पास में बनाये गये। बताया जाता है कि ये दोनों स्तूप रोज घटते-बढ़ते रहते हैं। इस मंदिर का स्थापत्य और बनावट सुन्दर है। मंदिर के रंग मण्डप को सुन्दर भित्ति चित्रों से सजाया गया है। इस मंदिर को वीरा देवल भी कहते हैं। मंदिर के मूल गंभारे के ऊपर विशाल शिखर के आसपास देव कुलिकाओं के छोटे-छोटे शिखर बहुत सुंदर दिखाई देते हैं। नारलाई के अन्य जैन मंदिरों में गिरनार तीर्थ बहुत प्रसिद्ध है जिसमें नेमीनाथ की श्यामवर्णी प्राचीन प्रतिमा प्रतिष्ठित है। गिरनार पहाड़ी के दाहिनी ओर सहसावन तीर्थ है यहाँ पर नेमि-राजुल के पद चिन्ह हैं। कहा जाता है कि गिरनार पर्वत पर नेमिनाथ की स्थापना भगवान श्री कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न ने की थी। इस पर्वत को यादव टेकरी भी कहते हैं। इसके सामने की टेकरी को शत्रुञ्जय तीर्थ कहा जाता है। सुपार्श्वनाथजी का मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, गौड़ी पार्श्वनाथ, सोगटिया पार्श्वनाथ तथा श्री वासुपूज्य स्वामी का मंदिर भी कला, शिल्प व स्थापत्य के उत्कृष्ट नमूने हैं।

स्वर्ण मंदिर, फालना – गोडवाड सर्किट के फालना नगर में स्थित जैन स्वर्ण मंदिर (स्वर्ण जैन तीर्थ) अपनी अनूठी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है, जो मुख्य रूप से भगवान पार्श्वनाथ को समर्पित है। मन्दिर के गर्भगृह में काले ग्रनाईट पत्थर से निर्मित जैन धर्म के 23वें तीर्थकर श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित है। पास ही श्री नाकौड़ा भैरव की पाषाण प्रतिमा भी विराजमान है। यह देश का पहला जैन स्वर्ण मंदिर माना जाता है, जिसके शिखर और दीवारों पर लगभग 90 किलो सोने की परत चढ़ाई गई है। जो अमृतसर के स्वर्ण मंदिर की याद दिलाता हैं । मंदिर के गुंबद और प्रतिमा को सजाने के लिए जैन समुदाय की महिलाओं ने 90 किलो सोना दान किया था।सन् 2004 में भारत के स्व. उपराष्ट्रपति श्री भैरासिंह शेखावत द्वारा इस मन्दिर का उद्घाटन सम्पन्न किया गया था। पर्यटकों के ठहरने और खाने की व्यवस्था भोजनशाला और धर्मशाला के रूप में उपलब्ध है।

संत शिरोमणि, रघुनाथ पीर धाम, ढालोप – अलख उपासक सिद्ध पुरुष सगसजी महाराज के राजस्थान की धरती पर अनेकानेक शिष्य हुए है, जिन्हें पीर की पदवी से नवाजा गया। दैवभूमि ढालोप मे प्रसिद्ध मेघवंशी समाज के संत शिरोमणि रघुनाथ पीर ने भी समस जी महाराज से दीक्षा लेकर ज्ञान रूपी आध्यात्मिक सिद्धि प्राप्त की थी।श्री रघुनाथ पीर ने अलख उपासना के माध्यम से अपने गुरु के निजारी दावे को आगे बढ़ाया। संत श्री रघुनाथ पीर का समाधि स्थल एवं भक्ति धाम ढालोप गाँव में स्थित है, जहा मारवाड़ क्षेत्र का ब्रह्माजी का एकमात्र मन्दिर है।परम संत श्री रघुनाथ पीर ने नाथ संप्रदाय के सिद्धो जसनाथ एवं लाडूनाथ जी को भी चुनौती दी और कई परचे व चमत्कार देकर उन्हें अंचभित किया। तब से नाथ संप्रदाय द्वारा आपको पीर की पदवी से नवाजा गया। श्री रघुनाथ पीर ने विक्रम संवत् 1385 में वैशाख माह शुक्ल पक्ष तिथि बारस शनिवार के दिन ढालोप में जीवित समाधि धारणकर अपने भक्तों को धर्म पर दृढ़ रहने की शिक्षा दी। प्रतिवर्ष बसंत पंचमी एवं फाल्गुन वदी पंचमी के दिन श्री रघुनाथ पीर की समाधि पर मेले का आयोजन होता है। राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश एवं अन्य अंचलों से लाखों लोग नमन करने पहुंचते है एवं पीरजी की कृपा से उनकी मुरादे पूरी होती है।

श्री आशापुरा माताजी मंदिर – नाडोल गाँव में स्थित एक प्रसिद्ध और

पूजनीय मंदिर है। यह मंदिर माँ आशापुरा माताजी को समर्पित है,माँ शाकम्भरी और आशापुरा दोनों एक ही एक स्वरूप है जिन्हें चौहान (चौहान राजपूत) वंश की कुलदेवी माना जाता है और राजस्थान तथा गुजरात में उनकी व्यापक रूप से पूजा की जाती है। श्री आशापुरा माताजी मंदिर के गर्भगृह में माँ आशापुरा माताजी की पवित्र मूर्ति स्थापित है। आशापुरा शब्द का अर्थ है आशाओं और इच्छाओं को पूरा करने वाली देवी। ऐसा माना जाता है कि सच्ची श्रद्धा से आने वाले भक्तों की मनोकामनाएँ देवी पूरी करती हैं। मंदिर का हर कोना आस्था परंपरा और इस भूमि की सुदृढ़ सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है। यह मंदिर पारंपरिक राजस्थानी शैली की हिन्दू वास्तुकला को दर्शाता है, जिसमें सुंदर नक्काशीदार स्तंभ, गर्भगृह और जटिल पत्थर की कलाकृतियाँ हैं। ऐसा माना जाता है कि नाडोल स्थित मंदिर की स्थापना मध्यकाल में, संभवत: चौहान वंश के शासकों द्वारा की गई थी। एक शिलालेख के अनुसार वि.स. 1030 में सिंहराज जो चौहान वंश का प्रथम पुरुष था। सांभर का शासक बना इसी का छोटा भाई लाखणसि चौहान था जो महात्वाकांक्षी वीर पुरुष अरावली पर्वतों को पार करके गोडवाड प्रदेश में पहुंचा।

गोड़वाड़ प्रान्त में उन दिनों पाली, बाली, और नाडोल प्रमुख व्यापारिक केन्द्र थे। नाडोल में सामन्तसिंह चावड़ा नामक गुजरातियों का एक सामन्त शासन करताथा जो अयोग्य होने के कारण प्रजा ने सागत सिंह के स्थान पर राव लक्ष्मण को राजसिंहासन पर आसिन्न किया। इस प्रकार लक्ष्मण नाडोल के महाधिराजाराज बन गये। उन्होंने एक भव्य मन्दिर का निर्माण करवाया और माँ शाकम्भरी देवी को माता आशापुरा के नाम से प्रतिष्ठित किया गया। मन्दिर के समीप ही बावड़ी का निर्माण करवाया जिसे आज महाराव लाखणसिंह बावड़ी के नाम से जाना जाता है। आशापुरा माता धाम में प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। लेकिन नवरात्रि में सबसे ज्यादा संख्या में श्रद्धालु आते हैं। इस दौरान विशेष पूजा, आरती और भजन गाए जाते हैं। माता में आस्था रखने वाले कई परिवार विशेष अवसरों, विवाह और अनुष्ठानों के दौरान आशीर्वाद लेने के लिए मंदिर आते हैं।

श्री आई माता मंदिर – नारलाई गांव में सीरवी समाज के आराध्य देवी आई माताजी का प्रसिद्ध मंदिर मौजुद है, वही उत्तर पूर्व एक विशाल हाथीनमा पर्वत जिसका नाम जय एकलिंगजी जैकलजी है,इस पर्वत के शिखर पर 15 फीट उंची हाथी की सफेद प्रतिमा है। साथ ही 200 से 250 फीट की उंचाई पर पर्वत की अधर गुफा में एकलिंगजी का एक छोटा मंदिर भी मौजुद है। इसी पहाड़ की तहलटी में भंवर गुफा है, इसके निर्माण के बारे में बताया जाता है कि माताजी ने सोहन सीटीया चलाया और भंवर गुफा का प्रादुर्भाव हुआ तो अंदर शिवजी का शिवलिंग स्थान पाया गया। जो ग्रामीणों की आस्था का केन्द्र बना हुआ है, भंवर गुफा को देखने के लिए बडी संख्या में देशी और विदेशी पर्यटक आते है। इस गुफा में प्रवेश करते ही अलग ही एहसास होता है। जिसकी लम्बाई करीब 500 मीटर से भी अधिक है,साथ ही नारलाई में कई ऐतिहासिक धरोहर आज भी मौजुद है।

अन्य दर्शनीय स्थल – पहाड़ी पर स्थित बैजनाथ महादेव, हिंगलाज माता मंदिर, गांव में स्थित तपेश्वर महादेव, चारभुजा तथा अन्य मंदिर दर्शनीय हैं।

श्री मां चामुण्डा माताजी – सर्वशक्तिमान भगवती माँ चामुण्डा महाशक्ति के रूप में मुण्डारा गाँव में स्थापित है। इस मंदिर के केन्द्र में चामुण्डा माता की दिव्य प्रतिमा स्थापित है। इस प्रतिमा के दाँए हिंगलाज माता तथा मुख्य मंदिर के प्रवेश द्वार के बाएं करणी माता की प्रतिमाए स्थापित है। मंदिर की दीवारो पर देवी के नौ रुपो में प्रथम शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघटा, कुष्णाडा, स्कन्दमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री के भित्ती चित्र बने हुए।इस प्रसिद्ध मंदिर की उत्पति एवं निर्माण के प्रामाणिक ऐतिहासिक तथ्य तो उपलब्ध नहीं है. लेकिन इसके ऐतिहासिक संदर्भ की कई जनश्रुतिया एवं किंवदन्तिया प्रचलित है। कहा जाता है कि माँ चामुण्डा का जालोर जिले के घुमड़ा (भादाजून) से पाली जिले के रानी गाँव तत्पश्चात वहा से कागडी गाँव एवं कालान्तर में वहा से मुण्डारा गाँव में आगमन हुआ। किंवदन्तियों के अनुसार मुण्डारा निवासी फुआजी रेबारी को माँ चामुण्डा ने स्वप्न में दर्शन दिये। इसके बाद मुण्डारा गांव के पश्चिम में एक किलोमीटर दूर रैबारी फुआजी ने मंदिर के निर्माण कार्य का श्रीगणेश किया। बाद में रेबारी फुआजी इस मंदिर के संस्थापक पुजारी बने। माँ चामुण्डा के इस मंदिर का दूसरा नाम सोदरा माँ हैं इसके पीछे भी कई जनश्रुतिया प्रचलित है। इसी उपलदक्ष में प्रतिवर्ष बसन्त पंचमी के दिन, यहाँ विशाल मेला लगता है जिसमें देश के कई प्रांतोमुख्यत: मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान से हजारो श्रद्धालु यहाँ पहुंचते है।

शीतला माताजीभाटून्द – भाटुन्द गाँव ब्राहम्णों की सदियों पुरानी नगरी है, मन्दिर अधिक होने के कारण इसे देव नगरी भी कहते हैं। ब्राहम्णों की नगरी होने के कारण इसे ब्रह्म नगरी भी कहते हैं। भाटुन्द गांव के संथापक श्री आदोरजी महाराज ने अपने 18 परिवार वालों सहित 13 शताब्दी में जौहर किया था। यहां 10वीं व 11वीं सदी का सूर्य मन्दिर है, जिसे महाराजा भोज ने बनाया था। महाराजा भोज ने यहां तालाब भी खुदवाया था। ऐसा माना जाता हैं कि, ब्राहमणो के आव्हान पर शीतला माता ने साक्षात दर्शन देकर यहाँ विराजमान हुई है। वर्ष में दो बार शीतला माताजी का विशाल मेला लगता है। मन्दिर में शीतला माता के सामने एक ऊखली है जो एक फिट गहरी है। पुरा गांव इस ऊखली में घड़ो से पानी डालता है, लेकिन पानी किधर जाता है, इसका रहस्य आज दिन तक किसी को पता नहीं चला है। गाँव वालो का ऐसा मानना है। एक बार सिरोही दरबार ने भी इस एक फुट गहरी ऊखली को दो कुआं का पानी लाकर भरने की निष्फल कोशिश की थी। जिन्हें माँ के प्रकोप का सामना करना पड़ा था। इस गाँव में श्री चेतन बालाजी का भव्य चमत्कारी मंदिर है।

मेले व त्यौहार – जब किसी स्थान पर कई लोग सामाजिक, धार्मिक अथवा व्यापारिक कारणों से एकत्रित होते है। उसे मेला कहते है। भारतीय संस्कृति में मेला व त्यौहारों की अनूठी सांस्कृतिक परम्परा है। हर मेला व त्यौहार गौरवशाली अतीत अनूठी सांस्कृतिक परम्पराओं रीतिरिवाजों और समृद्ध लोक संस्कृति का दर्शन कराते है। मेले यहां के लोक जीवन की किसी किंवदन्ती या ऐतिहासिक कथानक से जुड़ा हुआ हैं यही कारण है कि इन मेलों के आयोजन में सम्पूर्ण लोक जीवन पूरी सक्रियता से जीवन्त हो उठता है। मेलों में भाग लेने के लिए लोग अपनी पारम्पिरिक वेशभूषा में आते हैं, जिसमें महिलाओं की पोशाक व श्रृंगार दर्शनीय होते हैं। मेलों के अपने गीत और अपनी संस्कृति होती हैं, जिनके पीछे जनमानस की गहरी आस्था निहित है। इतने वर्षो के बीत जाने के पश्चात् भी लोक आस्था के ये स्थल अपनी पहचान बनाए हुए हैं और निरन्तर इनमें आगन्तुकों की संख्या बढ़ रही है। मुख्य मेलों का विवरण प्रस्तुत है।

सोनाणा खेतलाजी मेला – यह मेला पाली जिले की देसूरी तहसील के आना पंचायत के सारंगवास गांव में सुकड़ी नदी के किनारे स्तिथ सोनाणा खेतलाजी मन्दिर पर दो दिनों के लिए आयोजित किया जाता है। जिसे लक्खी

मेला भी कहते है। प्रत्येक साल चौत्र शुक्ल प्रतिपदा को आयोजित इस मेले में हजारों पर्यटक व स्थानीय लोग पारंपरिक वेशभूषा में आते है। मेले का मुख्य आकर्षण राजस्थान के विभिन्न जिलों से आने वाले गैर नर्तक दलों का प्रदर्शन हैं। प्रतिवर्ष 60 से 70 ऐसे दल अपनी परम्परागत वेशभूषा में ढोल, चंग और थाली की थाप पर अपना नृत्य प्रदर्शित करते है।

परशुराम महादेव मेला – पाली, राजसमंद जिले की सीमा पर अरावली पर्वत श्रृंखला की दुर्गम पहाड़ियों में स्थित परशुराम महादेव की प्राकृतिक गुफा पर यह मेला श्रावण शुक्ल षष्ठमी और सप्तमी पर यह मेला भरता है। वर्तमान में यह मेला लगभग दो महीने श्रावण और भाद्रपद में आयोजित होता है। मेले में लाखों श्रद्धालु भगवान परशुराम के प्रति हृदय में आस्था लेकर सम्मिलित होते है। श्रावण माह के प्रत्येक सोमवार को यहां पर श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ जाती हैं प्रति वर्ष लगभग पाँच लाख दर्शनार्थी प्राकृतिक का वातावरण आनंद व मन की शांति के लिए भगवान परशुराम के दर्शन करते है।

निम्बेश्वर नाथ मेला – फालना व सांडेराव के मध्य में निम्बों का नाथ महादेव का मन्दिर स्थित है।ऐसी किवदंती है कि पाण्डवों द्वारा यहां पर शक्ति-यज किया गया था। वर्तमान में वैशाख पूर्णिमा और महा शिव-रात्रि के दिन यहां मेले का आयोजन होता है।

अन्य मेले

गौरिया गणगौर मेला – बाली तहसील में आदिवासी संस्कृति का परिचायक गौरिया गणगौर मेला गौरियां गांव में प्रतिवर्ष वैशाख शुक्ल सप्तमी को आयोजित होता है।

वरकाना मेला – रानी स्टेशन के निकट स्थित वरकाना जैन तीर्थ पर जैन मतावलम्बियों का यह मेला प्रतिवर्ष पोश शुक्ल दशमी को प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है।

शीतला माता मेला भाटूड गाँव, आशापुरा माताजी ,नाड़ोल प्रमुख हैं।

महोत्सव

(1) रणकपुर महोत्सव – गोड़वाड़ सर्किट के पाली जिलें में स्थित रणकपुर जैन मन्दिर में आयोजित यह स्थानीय त्योहार, क्षेत्रीय लोक संस्कृति और विरासत का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है। राज्य पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित रणकपुर- जवांई महोत्सव पाली जिले के लोकप्रिय पर्वो में से एक माना जाता है। इस महोत्सव में अनेक रोचक गतिविधियां आयोजित की जाती है। जिनमें फॉरेस्ट ट्रैकिंग, जैन मन्दिरों का दर्शन, हॉट एयर बेलून, हॉर्स राइडिंग, रस्साकस्सी, क्षेत्रीय लोक नृत्य क्षेत्रीय और शास्त्रीय गायन, योग गतिविधियां, व दीपदान उल्लेखनीय है। इस महोत्सव का सबसे आकर्षक कार्यक्रम यहां स्थित सूर्य मन्दिर के ऑपन एयर एम्फीथिएटर में आयोजित शास्त्रीय एवं लोक प्रस्तुतीकरण के रूप में होता है। प्राय: यह उत्सव 21 से 23 दिसम्बर के मध्य आयोजित किया जाता है। जिसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों से पर्यटक आते है और इस उत्सव के सांस्कृतिक रंगों से सरोबार हो जाते है।

(2)गोडवाड़ महोत्सव – गोड़वाड़ सर्किट के पाली जिले की बाली उपखण्ड मुख्यालय पर गोड़वाड़ अचंल की संस्कृति और धरोहर से देशी-विदेशी पर्यटकों को रूबरू कराने के लिए गोड़वाड़ महोत्सव का आयोजन जिला प्रशासन पर्यटन विभाग के तत्वाधान में आयोजित किया जाता है। मार्च महीने में आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में बाली के ऐतिहासिक दुर्ग में इतिहासकार मण्डल द्वारा 12वीं शताब्दी में निर्मित बाली दुर्ग, इसके नामकरण और शासकों की उपलब्धियों का उल्लेख किया जाता साथ ही राजस्थानी लोक कलाकार भी अपनी प्रस्तुतियों के साथ इस कार्यक्रम का हिस्सा बनते है। इस उत्सव के अन्तर्गत भव्य शोभायात्रा और विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम, ख्याति प्राप्त गैर मण्डलों के कलाकार ढोल की थाप पर गैर नृत्य की प्रस्तुतियों देते है। इस आयोजन के अन्तर्गत गोड़वाड़ श्री, हॉर्स राइडिंग, साइकिल रेस, बालक बालिका दौड़, मटका रेस,ऊट नृत्य, आदि । हॉट बेलून पर बाली महोत्सव का टेग लगाकर छोड़ा जाता है। जो इसका एक मुख्य आकर्षण है।

लोक-नृत्य परम्परा – राजस्थान को विश्व के अनेक भागों में नृत्य के क्षेत्र में प्रसिद्धि दिलाने वाला तेरहताली नृत्य पादरला गाँव, पाली जिले की ही देन है। नृत्यों में सादड़ी की मूसल गैर, काणा गाँव की सोपा गैर मुण्डारा की कच्छीघोड़ी नृत्य, मादा व बाली का डण्डिया गैर-नृत्य, बूसी का राग नृत्य, चौघरियों की लूर भील जाति का घूमर नृत्य व गरासियों का गणगौर नृत्य, अपने-अपने क्षेत्र के साथ पूरे प्रदेश में लोकप्रिय है।

राजस्थान के ग्रामीण पर्यटन की चुनौतियां – ग्रामीण पर्यटन के विकास में कई चुनौतियां भी है। पर्यटकों व स्वयं ग्रामीणों में इसके बारे में जागरूकता की कमी है। किसी भी गांव में अच्छा दर्शनीय स्थल होने के बावजूद भी ग्रामीणों को इसका आभास नही होता। अत: ग्रामीणों के बीच जागरूकता बढाना और देश-विदेश में ग्रामीण पर्यटन की कुशल विपणन रणनीतियां बनाना आवश्यक है। साथ ही हमें अपने गांवों का आधारभूत बुनियादी ढांचा भी विकसित करना होगा ताकि जब पर्यटक जब राजस्थान के गांव में जाये तो उनके लिए पक्की सड़कें हो, ठहरने का साफ-सुंदर स्थान हो, स्थानीय ट्यूरिस्ट गाईड हो, बिजली व तीव्र इंटरनेट की सुविधा हो एवं पर्यटकों की दैनिक वस्तुओं की जरूरत को पूर्ण करने की दूकानें हो। इसके अलावा ग्रामीण युवकों को आचार-व्यवहार के बारे में प्रशिक्षित करना होगा ताकि वे पर्यटकों से प्रभावित संवाद कर सकें। अपने आतिथ्य के लिए मशहूर ग्रामीणों को यह प्रशिक्षण देना होगा कि वे कैसे पर्यटक द्वारा उनके गांव में बिताये गये पलों को यादगार बना सके।

निष्कर्ष – राजस्थान के गांव हमेशा से ग्रामीण जीवन से संबंधित अपनी लोक कलाओं, लोक गीत लोक नृत्य, मेले, त्यौहार, किले ,कलात्मक हवेलियोंबावडियों, एवं रेत के धोरों के साथ हस्तशिल्प,चित्रकलाओं एवं स्थापत्य कला के लिए विख्यात रहे है। यहां की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, प्रकृति के सान्निध्य में खुला वातावरण पर्यटकों को अपनी ओर खींचने के लिए पर्याप्त है। यही सब कारक राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन को विपुल संभावनाओं वाला क्षेत्र बना देते है। ग्रामीण पर्यटन से जहां एक तरफ यह ग्रामीण युवकों के लिए रोजगार का माध्यम बनेगा, वहीं दूसरी ओर विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और जीवन शैली के लोगों को एक-दूसरे के करीब लाकर हमारी राष्ट्रीय एकता को भी मजबूत करेगा।गांव को सुरक्षित और आनंदमयी पर्यटन स्थल में परिवर्तित करने के लिए वहां के स्थानीय समुदायों की भागीदारी एवं सरकार, एनजीओ, ग्राम पंचायत, सामुदायिक संगठन व पीपीपी भागीदारी और समन्वय को साथ सभी मिलकार काम करना होगा। गांव में स्वयं सहायता समूहों के जरिये भी स्थानीय कलाओं का विकास किया जा सकता है। इस प्रकार से हम कह सकते है कि राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन की असीम संभावनायें है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. सुरेश चन्द्र बंसल (2016-17) पर्यटन भूगोल एवं यात्रा प्रबंधन, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।

2. हरीश कुमार खत्री (2015) पर्यटन भूगोल, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल।
3. डॉ. राजेश कुमार व्यास (2013) पर्यटन उदव एवं विकास, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
4. डॉ. मोहन लाल गुप्ता (2018) जोधपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
5. नीरज जयसिंह, शर्मा भगवती लाल (2025) राजस्थान का इतिहास एवं सांस्कृतिक परम्पराराजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
6. सक्सेना हरिमोहन राजस्थान का भूगोल राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
7. भल्ला एल.आर (2022) राजस्थान का भूगोल, कुलदीप बुक डिपो, अजमेर।
8. कुमार जगदीश (2022)शोध प्रंबन्ध गोड़वाड़ सर्किट का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन पर्यटन के विशेष संदर्भ मे।
9. राठौड़ भंवरसिंह गोडवाड़ विरासत सांस्कृतिक, ऐतिहासिक हिन्दी मासिक पत्रिका।
10. रचना सिंह का लेख, टाइम्स ऑफ इंडिया, जयपुर, 18 मई 2017
11. वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन (विभिन्न अंक) पर्यटन विभाग राजस्थान
12. चौधरी उम्मेद (2020) रणकपुर पर्यटन स्थल का भौगोलिक अध्ययन शोध पत्र (NSS , ISSN 2394-3793 JUNE -2020)
13. इंदौलिया उमाकांत ग्रामीण पर्यटन की सभावनाएं एवं प्रभाव अखण्ड ज्योति सितम्बर 2015
14. Gupta B Sharma B – Potential appraisal of Haryana tourism shodha prabha UGC care Journal Issn 0974-8946 vol 47
15. व्यक्गित साक्षात्कार : श्री चम्पालाल सहायक लेखाधिकारी, नारलाई –देसूरी।
16. व्यक्गित साक्षात्कार : श्री कान्तिलाल प्रयोगशाला सहायक भाटून्द – बाली।
17. पाली जिला दर्शन 2014
18. भास्कर व राजस्थान पत्रिका समाचार पत्र।
19. www.tourism.rajasthan.gov.in
20. www.tourism.gov.in

****